द्वितीय खण्ड

अनुभवात्मक परिवेश

अध्याय : 4

बाल-श्रमिकों की वैयक्तिक पृष्ठभूमि शैली

बाल श्रमिकों की वैयक्तिक पृष्ठभूमि शैली

समाजशास्त्रीय अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण बिन्दु अध्ययन में सम्मिलित सूचनादाताओं का वैयक्तिक पृष्ठभूमि की विवेचना है। यह गवेषणा इस मान्यता पर आधारित है कि व्यक्ति एक वर्गीय प्राणी होता है। वर्ग–विशेष में उसकी स्थिति उसके जीवन में अवसर, आकांक्षा एवं गतिशीलता का व्यापक रूप से निर्धारण करती है। उच्च–वर्ग, मध्यम–वर्ग एवं निम्न वर्ग के जीवन की भौतिक–दशायें एक दूसरे से नितान्त भिन्न हैं। अतः वैयक्तिक पृष्ठभूमि गतिशीलता की रेखा पर इन तीनों वर्गों की स्थिति क्या होगी, यह उनकी विशिष्ट समाजिकता एवं वर्गीय–स्थिति पर निर्भर करती है।[1] समाज की आधार एवं अधिसंरचना के निर्माण में सम्पत्तिमूलक सम्बन्ध प्राथमिक भूमिका रखते हैं। यही सम्बन्ध व्यक्ति के सामाजिक

---

1 सरोकिन, पी.ए. : सोशल एण्ड कल्चरल मोबिल्टी, दी फ्री प्रेस ऑफ ग्लेनको, 1927.

क्रियाओं और सामाजिक सम्बन्धों का भी निर्धारण करते हैं।[1] भारतीय समाज में स्तरीकरण का विभाजन वर्ग के आधार पर न होकर जाति के आधार पर हुआ है। जातिगत स्थिति की उच्चता एवं निम्नता न केवल संस्कारगत है, वरन् आर्थिक आधार पर भी विभिन्न जातियों के मध्य पर्याप्त अन्तर पाया जाता है। सामान्यतः उच्च जाति विशिष्ट स्थिति रखने वाली जाति रही है तथा इस जाति को परम्परागत रूप से अधिक प्रतिष्ठाजनक एवं लाभकर व्यवसाय प्राप्त रहे हैं। इसके विपरीत निम्न जातियाँ आर्थिक दृष्टि से कम लाभकर एवं अप्रतिष्ठित व्यवसायों में संलग्न रही हैं व्यक्ति की सामाजिक स्थिति जाति की सामान्य स्थिति से निर्धारित अवश्य होती है, किन्तु वर्तमान में जातीय आधार भी व्यक्ति की योग्यता एवं उपलब्धि के बढ़ते महत्व के कारण अन्तर स्थापित हुए हैं।[2] शिक्षा, व्यवसाय, आय और सम्पत्ति व्यक्ति के वैयक्तिक चित्रकल्प के निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर रहे हैं।

सामाजिक संस्तरण की ऐतिहासिक व्यवस्था के मध्य व्यक्ति का समाजीकरण तथा उसके विकास हेतु आवश्यक दशायें उपलब्ध

---

1 नवी, एच. एण्ड शैनिन टी. (एडि.) : इण्ट्रोडक्शन टू दी सोसियोलॉजी आफ डवलपिंग सोसायटीस, मैकमिलन, लन्दन, 1982, पृ. 308–31.

2 श्रीनिवास, एम.एन. : कास्ट इन मार्डन इण्डिया एण्ड अदर ऐस्से, एशिया पब्लिशिंग हाउस, बाम्बे, 1962.

कराने में परिवार की महती भूमिका है। यह एक प्राथमिक समूह के रूप में जिसका कि व्यक्ति जन्म से सदस्य होता है व्यक्ति के सर्वांगीण विकास हेतु आवश्यक सामाजिक एवं आर्थिक आधार प्रदान करता है। एक ओर परिवार के अन्तर्गत सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों के आधारभूत तत्व व्यक्ति तक पहुँचते हैं और उन्हीं के आधार पर व्यक्तित्व का निर्माण होता है तो दूसरी ओर परिवार की आर्थिक संरचना उसके व्यक्तित्व को विकसित होने की दशाये उपलब्ध कराती हैं।

औद्योगिकीकरण एवं नगरीयकरण ने पारिवारीक संरचना में अभूतपूर्व परिवर्तन के लक्षण परिलक्षित हुए हैं। सीमित संसाधनों पर जनभार अत्याधिक होने से समस्त पारिवारिक सदस्यों के हाथ को काम नही मिल पाता फलतः कमाने वालो की संख्या कम एवं खाने वालों की संख्या अधिक हो जाती है। परिवार अपनी समस्त आय से भी इन सदस्यों की न्यूनतम प्राथमिक आवश्यकताओं की तृष्टि नहीं कर पाता परिणामस्वरूप परिवार अभाव के दुष्चक्र में फँस जाते हैं और सामाजिक तथा आर्थिक रूप से विपन्नता को वरण करते है। दुर्खीम[1], सरोकिन[1], घुरिये[2], दास[3], रेडिक्लिफ ब्राउन[4], कपाडिया[5]

---

1 दुर्खिम, इ. : दी रूल्स ऑफ सोसियोलाजिकल मेथड, फ्री प्रेस, न्यूयाक, 1950, पृ. 61,50.

आदि के अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि व्यक्ति की आयु, जाति, परिवार, शिक्षा, वैवाहिक स्थिति, आवास आदि उसके वैयक्तिक पृष्ठभूमि के महत्वपूर्ण अंग हैं।

प्रस्तुत अध्याय में अध्ययन हेतु चयनित उत्तरदाताओं के वैयक्तिक परिचय के अन्तर्गत उनकी आयु, धर्म, जाति, शिक्षा, मनोरंजन के साधन, आय, भाषा आदि के सम्बन्ध में सारिणीयन एवं विश्लेषण किया गया है।

आयु

समाजवैज्ञानिक अध्ययन का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण परिवर्त्य आयु है। आयु न केवल काल के आयाम पर व्यक्ति की शारीरिक

---

1 सोरोकिन, पी.ए. : सोशल एण्ड कल्चरल मोबिल्टी, दी फ्री प्रेस ऑफ ग्लेनको, 1927.

2 घुरिये, जी.एस. : क्लास, कास्ट एण्ड ऑकुपेशन, पापुलर बुक डिपो, बाम्बे, 1961.

3 दास, जे.पी. : एथार्टी, पावर एण्ड फेमिली रिलेशनशिप इन टू प्रीमेटिव ट्राइब्स ऑफ उड़ीसा, दि इस्टर्न एन्थ्रोपलॉजिस्ट, वा. 16, नं. 3, 1968.

4 रेडक्लिफ ब्राउनः स्ट्रक्चर एण्ड फंक्शन इन प्रीमेटिव सोसाइटी, मैकमिलन कं., न्यूयार्क, 1971.

5 कपाडिया, के.एम. : रूरल फेमिली पैटर्नस : ए स्टडी इनअर्बन–रूरल रिलेशन, सोसियोलाजिकल बुलेटिन, वा. 5, 111–126, 1956.

क्षमताओं को सम्बोधित करती है वरन् इसके द्वारा व्यक्ति की सामाजिक–सांस्कृतिक प्रस्थिति का भी पता चलता है। जैविकीय दृष्टि से आयु मनुष्य के शारीरिक वृद्धि एवं परिपक्वता की सूचक है। शिशु, बालक, किशोर, युवा, वृद्ध आदि शब्द व्यक्ति के शारीरिक विकास के विभिन्न सोपान हैं जो आयुगत स्तरों को व्यक्त करते हैं। न केवल शारीरिक विकास की दृष्टि से बल्कि मानसिक परिपक्वता की दृष्टि से भी ये शब्द व्यक्ति की विभिन्न विशेषताओं को इंगित करते हैं। व्यक्तित्व विकास एवं समाजीकरण की दृष्टि से भी आयु का व्यक्ति के जीवन में भिन्न–भिन्न महत्व है। जन्म से लेकर युवा होने तक का समय मुख्यतः भूमिका ग्रहण, मनोवृत्तियों के विकास एवं आकांक्षाओं के निर्माता का समय होता है। युवावस्था आकांक्षाओं की पूर्ति तथा सामाजिक, आर्थिक सक्रियता का समय होता है। वृद्धावस्था अनुभवजन्य विचार एवं व्यवहार का समय है। सामाजिक–आर्थिक विकास के सन्दर्भ में युवावस्था, जीवन की सबसे अधिक सक्रिय अवस्था है।[1] वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं से उनकी आयु के विषय में जानकारी प्राप्त की गई। प्राप्त जानकारी को निम्न सारणी में दर्शाया गया है।

---

1 एरिस, फिलिप : सेन्चुरी ऑफ चाइल्डहुड, जॉनसन केपे लि, 1962.

सारणी संख्या – 4.1

उत्तरदाताओं की आयु

आयु	आवृत्ति	प्रतिशत
5 – 6 वर्ष	21	7.00
7 – 8 वर्ष	66	22.00
9 – 10 वर्ष	39	13.00
11 – 12 वर्ष	102	34.00
13 – 14 वर्ष	72	24.00
योग	300	100.00

सारणी के अवलोकन से स्पष्ट है कि 7.00 प्रति उत्तदाताओं की आयु 5–6 वर्ष, 22.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं की आयु 7–8 वर्ष, 13.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं की आयु 9–10 वर्ष, 34.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं की आयु 11–12 वर्ष एवं 24.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं की आयु 13–14 वर्ष है।

अतः स्पष्ट है कि अधिकांश (34.00 प्रतिशत) उत्तरदाताओं की आयु 11–12 वर्ष है।

धर्म

धर्म प्रत्येक व्यक्ति को अपने मूल्यों और प्रतिमानों के अनुरूप आचरण करने के लिए बाध्य करता है। वस्तुतः धार्मिक आधार समाज के नैतिक मूल्यों, आदर्शो, परम्पराओं और व्यवहार प्रतिमानों का समन्वय होती है। परिणामतः उसमें जीवन यापन करने वाले सदस्यों को यथा अनुरूप व्यवहार करना पड़ता है। धर्म तथा आर्थिक तत्व में परस्पर संबंध है और दोनों एक दूसरे पर आश्रित हैं। उसकी यह मान्यता रही है कि यहॉ की जन्मपरक जाति व्यवस्था में मनुष्य को जो चाहे काम करने की स्वतन्त्रता नही थीं। अगर कोई अपना पेशा छोड़कर दूसरा पेशा करना चाहता था तो वह नहीं कर सकता था। व्यवसायिक पूँजीवाद का जन्म वहॉ हो सकता है, जहॉ मनुष्य काम करने में स्वतन्त्र हो सकता है। हिन्दू धर्म के अनुसार मनुष्य का कर्म बंधनों को काटना और उसे मुक्ति प्राप्त करना है। उत्तरदाताओं से उनके धर्म के विषय में जानकारी प्राप्त की गयी, प्राप्त जानकारी को निम्न सारणी में दर्शाया गया है।

सारणी सं. – 4.2

उत्तरदाताओं का धर्म

धार्मिक स्थिति	आवृत्ति	प्रतिशत
हिन्दू	213	71.00
मुस्लिम	63	21.00
अन्य	24	8.00
योग	**300**	**100.00**

सारणी के अवलोकन से स्पष्ट है कि अध्ययनगत 71.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं का धर्म हिन्दू, 21.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं का धर्म मुस्लिम एवं 8.00 प्रतिशत उत्तरदाता अन्य धर्म को मानने वाले हैं।

अतः स्पष्ट है कि अधिकांश उत्तरदाता हिन्दू धर्म को मानने वाले हैं।

जाति

परम्परागत भारतीय समाज में सामाजिक प्रस्थिति निर्धारण का सर्वाधिक महत्वपूर्ण आधार जाति व्यवस्था रहा है। जाति एक अन्तर्विवाही समूह है जो जन्म के आधार पर व्यक्ति को एक निश्चित सामाजिक प्रस्थिति तथा उससे सम्बन्धित अधिकार, दायित्व, शक्ति,

सुविधा, भूमिका एवं निर्योग्यता प्रदान करती है। परम्परागत रूप से भारतीय समाज में विभिन्न जातियों के मध्य एक निश्चित संस्तरण पाया जाता है। ब्राह्मण जाति प्रतिष्ठा एवं शक्ति के सर्वोच्च शिखर पर आसीन रही है, जबकि शूद्र जाति का स्थान अत्यन्त निम्न रहा है। शूद्र जाति अनेक प्रकार की धार्मिक, सामाजिक एवं आर्थिक निर्योग्यताओं की शिकार रही है। जाति व्यवस्था अपने परम्परागत स्वरूप में व्यवसाय के साथ अत्यन्त निकट रूप से सम्बद्ध रही है। लगभग सभी जातियों का अपना कुछ निश्चित व्यवसाय रहा है तथा कुछ जातियां तो अपने व्यवसाय के नाम से ही सम्बोधित की जाती रही हैं। मूल रूप से भारतीय समाज का विभाजन चार प्रमुख जातियों – ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र जातियों में हुआ है। किन्तु कालान्तर में इन चारों प्रमुख जातियों की अनेक उपशाखायें विकसित हुयीं तथा आधुनिक भारत में अनेक छोटी–छोटी अन्तर्विवाही जातियों में जनसंख्या का विभाजन हुआ है।

उत्तरदाताओं से उनकी जातिगत स्थिति के बारे में जानकारी प्राप्त की गयी प्राप्त जानकारी को निम्न सारणी में दर्शाया गया है–

सारणी सं. – 4.3

उत्तरदाताओं का जातिगत विभाजन

जाति	आवृत्ति	प्रतिशत
उच्च जाति	108	36.00
पिछड़ी जाति	161	53.67
अनुसूचित जाति	31	10.33
योग	**300**	**100.00**

तथ्यों के अवलोकन से स्पष्ट है कि अध्ययन में सम्मिलित 36.00 प्रतिशत उत्तरदाता उच्च जाति के सदस्य हैं, 53.67 प्रतिशत उत्तरदाता पिछड़ी जाति के सदस्य हैं एवं 10.33 प्रतिशत उत्तरदाता अनुसूचित जाति के सदस्य हैं।

अतः स्पष्ट है कि अधिकांश (53.67 प्रतिशत) उत्तरदाता पिछड़ी जाति के सदस्य हैं।

शिक्षा

शिक्षा सामाजिक–आर्थिक गतिशीलता का एक प्रभावशाली माध्यम है। आधुनिक समाज में औपचारिक शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति कुछ विशिष्ट योग्यता, क्षमता एवं कुशलता को ग्रहण करके सक्रिय सामाजिक जीवन व्यतीत करता है। रोजगार के अवसर शिक्षा के माध्यम से अधिक विस्तृत हो जाते हैं। कुछ विशेष प्रकार

की नौकरी या व्यवसाय के लिए निश्चित प्रशिक्षण एवं दक्षता की आवश्यकता होती है। शिक्षा आधुनिकीकरण का महत्वपूर्ण साधन भी है। शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति या समूह में ऐसी मनोवृत्तियों, दृष्टिकोणों, भावनाओं एवं आकांक्षाओं का विकास होता है, जो उसे गतिशीलता की ओर उन्मुख करती हैं। परम्परागत समाजों में शिक्षा के माध्यम से नवीन विकास कार्यक्रमों के लिए आवश्यक वैचारिक पृष्ठभूमि तैयार की जाती है। बाल श्रमिकों के लिए बाल श्रम परियोजनाओं के तहत शिक्षा की व्यवस्था की गयी है ।

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं के शैक्षिक स्तर को ज्ञात किया गया है। उत्तरदाताओं से प्राप्त जानकारी को निम्न सारणी में दर्शाया गया है।

सारणी सं. – 4.4

उत्तरदाताओं की शिक्षा

शैक्षणिक स्तर	आवृत्ति	प्रतिशत
निरीक्षर	111	57.00
प्राइमरी	63	27.00
मिडिल	48	16.00
योग	**300**	**100.00**

तथ्यों के अवलोकन से स्पष्ट है कि अध्ययन में सम्मिलित 57.00 प्रतिशत उत्तरदाता निरक्षर हैं, 27.00 प्रतिशत उत्तरदाता प्राइमरी, 16.00 प्रतिशत उत्तरदाता मिडिल तक शिक्षा प्राप्त है।

अतः स्पष्ट है कि अधिकांश (57.00 प्रतिशत) उत्तरदाता निरक्षर हैं।

पढ़ाई न करने व छोड़ने का कारण

उत्तरदाताओं से जानकारी प्राप्त की गयी कि उनका पढ़ाई न करने व छोड़ने का क्या कारण है?, प्राप्त जानकारी को निम्न सारणी में दर्शाया गया है।

सारणी सं. – 4.5

पढ़ाई न करने व छोड़ने का कारण

कारण	आवृत्ति	प्रतिशत
निर्धनता	99	33.00
माता–पिता का दबाव	60	20.00
स्वयं की अरुचि	132	44.00
अन्य	9	3.00
योग	**300**	**100.00**

तथ्यों के अवलोकन से स्पष्ट है कि अध्ययन में सम्मिलित 33. 00 प्रतिशत उत्तरदाता का पढ़ाई न करने व छोड़ने का कारण

निर्धनता, 20.00 प्रतिशत के अनुसार माता–पिता का दबाव, 44.00 प्रतिशत के अनुसार स्वयं की अरुचि एवं 3.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने अन्य कारण बताया।

अतः स्पष्ट है कि अधिकांश उत्तरदाताओं के अनुसार पढ़ाई न करने व छोड़ने का कारण स्वयं की अरुचि है।

मौका मिले तो क्या पढ़ना चाहेंगे

उत्तरदाताओं से जानकारी प्राप्त की गयी कि यदि उन्हें मौका मिले तो क्या वह पढ़ना चाहेंगे?, प्राप्त जानकारी को निम्न सारणी में दर्शाया गया है–

सारणी सं. – 4.6

पढ़ाई का मौका मिलने पर क्या पढ़ना चाहेंगे

विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
हाँ	180	60.00
नहीं	120	40.00
योग	**300**	**100.00**

तथ्यों के अवलोकन से स्पष्ट है कि अध्ययन में सम्मिलित 60.00 प्रतिशत उत्तरदाता पढ़ाई का मौका मिलने पर पढ़ना चाहेंगे एवं 40.00 प्रतिशत उत्तरदाता पढ़ाई का मौका मिलने पर नहीं पढ़ना चाहेंगे।

अतः स्पष्ट है कि अधिकांश उत्तरदाताओं के अनुसार पढ़ाई का मौका मिलने पर पढ़ना चाहेंगे।

आवासीय पृष्ठभूमि

उत्तरदाताओं से जानकारी प्राप्त की गयी कि उनकी आवासीय पृष्ठभूमि क्या है, प्राप्त जानकारी को निम्न सारणी में दर्शाया गया है–

सारणी सं. – 4.7

उत्तरदाताओं की आवासीय पृष्ठभूमि

विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
नगरीय	210	70.00
ग्रामीण	90	30.00
योग	**300**	**100.00**

तथ्यों के अवलोकन से स्पष्ट है कि अध्ययन में सम्मिलित 70.00 प्रतिशत उत्तरदाता की आवासीय पृष्ठभूमि नगरीय एवं 30.00 प्रतिशत की ग्रामीण है।

अतः स्पष्ट है कि अधिकांश उत्तरदाता (70.00 प्रतिशत) नगरीय पृष्ठभूमि के हैं।

मनोरंजन के लिए समय

उत्तरदाताओं से जानकारी प्राप्त की गयी कि क्या आपको मनोरंजन के लिए समय मिलता है, प्राप्त जानकारी को निम्न सारणी में दर्शाया गया है–

सारणी सं. – 4.8

मनोरंजन के लिए समय

विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
हाँ	66	22.00
नहीं	174	58.00
कभी–कभी	60	20.00
योग	**300**	**100.00**

तथ्यों के अवलोकन से स्पष्ट है कि अध्ययन में सम्मिलित 22.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं को मनोरंजन के लिए समय मिलता है एवं 58.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं को मनोरंजन के लिए समय नहीं मिलता है तथा 20.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं को मनोरंजन के लिए कभी–कभी समय मिलता है।

अतः स्पष्ट है कि अधिकांश (58.00 प्रतिशत) उत्तरदाताओं को मनोरंजन के लिए समय नहीं मिलता है।

मनोरंजन

अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं को यह जानकारी प्राप्त की गई कि वह अपना मनोरंजन किस प्रकार से करते हैं?, उनसे प्राप्त जानकारी को निम्नलिखित सारणी में प्रस्तुत किया गया है।

सारणी सं. – 4.9

मनोरंजन किस प्रकार करते हैं

विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
मित्रों से गपशप	15	22.73
खेलकर	20	30.30
घूमकर	12	18.18
सिनेमा देखकर	10	15.15
अन्य	9	13.64
योग	**66**	**100.00**

तथ्यों के अवलोकन से स्पष्ट है कि अध्ययन में सम्मिलित 66.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं को मनोरंजन के लिए समय मिलता है जिसमें 22.73 प्रतिशत उत्तरदाता मित्रों से गपशप करते हैं, 30.30 प्रतिशत उत्तरदाता खेलकर अपना मनोरंजन करते हैं, 18.18 प्रतिशत उत्तरदाता घूमकर, 15.15 प्रतिशत उत्तरदाता सिनेमा देखकर तथा 13.64 प्रतिशत उत्तरदाता अन्य प्रकार से अपना मनोरंजन करते है।

अतः स्पष्ट है कि अधिकांश उत्तरदाता खेलकर अपना मनोरंजन करते है।

भाषा

अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाताओं को यह जानकारी प्राप्त की गई कि वह कौन सी भाषा जानते हैं?, उनसे प्राप्त जानकारी को निम्नलिखित सारणी में प्रस्तुत किया गया है।

सारणी सं. – 4.10

भाषा के सम्बन्ध में उत्तरदाताओं का वर्गीकरण

भाषा	आवृत्ति	प्रतिशत
हिन्दी	162	54.00
अंग्रेजी	15	5.00
भोजपुरी	81	27.00
अन्य स्थानीय	42	14.00
योग	**66**	**100.00**

तथ्यों के अवलोकन से स्पष्ट है कि अध्ययन में सम्मिलित 54.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं की भाषा हिन्दी, 5.00 प्रतिशत की अंग्रेजी, 27.00 प्रतिशत की भोजपुरी एवं 14.00 प्रतिशत की अन्य स्थानीय भाषा है।

अतः स्पष्ट है कि अधिकांश (54.00 प्रतिशत) उत्तरदाताओं की भाषा हिन्दी है।